रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

लेखनी से जनजागरण करने वालों ने बनाया इतिहास –कुलपति प्रो. मिश्र

हिन्दी पत्रकारिता दिवस के उपलक्ष्य पर चार दिवसीय ई–व्याख्यान माला का समापन

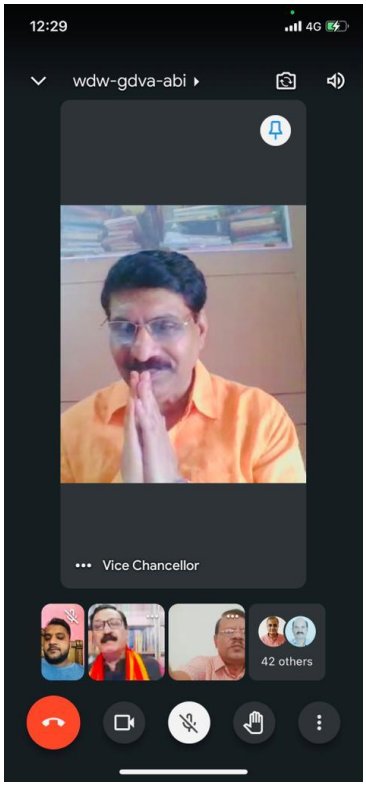

जबलपुर 30 मई। हमें पूर्वजों से जो इतिहास धरोहर के रूप में मिला है, उसे देखना जरूरी है। महापुरुषों के संघर्ष और उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता को देखकर, उससे प्रेरित होकर रास्ता निकालने की आवश्यकता है। जिस समय पत्रकारिता मिशन थी, उस समय समाज की विकृतियों को दूर करने और उसके जागरण के लिए पत्रकारिता का उपयोग किया जाता था। हमें उन पत्रकारों को याद करना चाहिए, जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज जागरण का कार्य किया, जिन्होंने समाज की समस्याओं के समाधान दिए हैं। ये विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने रविवार को विश्वविद्यालय में हिन्दी पत्रकारिता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित ई–व्याख्यान माला समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

रादुविवि के संचार अध्ययन एवं शोध विभाग (पत्रकारिता विभाग) द्वारा हिन्दी पत्रकारिता दिवस के उपलक्ष्य में चार दिवसीय व्याख्यानमाला की श्रृंखला के अंतिम दिवस 'राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दी पत्रकारिता' विषय पर आयोजित ई–व्याख्यान माला में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईएमसी दिल्ली के डायरेक्टर प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि भारतीय राष्ट्रवाद को जीवित रखने और विकसित करने में हिन्दी पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान है। प्रारंभ से ही हिन्दी पत्रकारिता अपने ऊंचे

आदर्शों का पालन करती आ रही है। सदा से ही राष्ट्रीयता उसका मुख्य स्वर रहा है। राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए पत्रकारों ने अनेक कष्ट और यातनाएं सही, किंतु वे अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए पत्रकारों ने अनेक कष्ट और यातनाएं सहीं। स्वतंत्रता पूर्व की हिन्दी पत्रकारिता राष्ट्रीय आंदोलन को गति, शक्ति और दिशा प्रदान की।

जबलपुर में हिन्दी पत्रकारिता की अलख–

ई–व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ पत्रकार श्री चैतन्य भट्ट ने कहा कि भारतीय पत्रकारिता की शुरूआत में ही विदेशी गुलामी के प्रति जनाक्रोश था, उसकी अभिव्यक्ति थी। उस समय समाज की विकृतियों को दूर करने और उसके जागरण के लिए पत्रकारिता का उपयोग किया जाता था। जबलपुर की पत्रकारिता ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनजागरूकता की अलख जगाने का कार्य किय। सबसे पहले 19वीं सदी के अंत में जबलपुर समाचार पत्र के नाम से मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ इसके पश्चात साप्ताहिक शुभचिंतक और काव्य सुधा निधि का प्रकाशन हुआ जिसके सम्पादक रघुवरप्रसाद द्विवेदी थे। मध्यप्रदेश में पं. द्वारका प्रसाद मिश्र, श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्री माधवराव सप्रे, पं. भगवतीधर बाजपेयी जैसे कई नाम हैं जिन्होंने पत्रकारिता की अलख से जनजन को जागरूक किया। विषय प्रवर्तन करते हुए संकायाध्यक्ष एवं पत्रकारिता विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने कहा कि भारत में हिन्दी पत्रकारिता का प्रारंभ 30 मई 1826 को कलकत्ता से प्रकाशित 'उदंत्त मार्तण्ड' के साथ हुआ। 'उंदत मार्तड' के संपादक पंडित जुगल किशोर शुक्ल थे। इसी की याद में प्रतिवर्ष हिन्दी पत्रकारिता दिवस का आयोजन किया जाता है।

कोरोना काल में बिछड़े पत्रकारों को दी गई भावभीनी श्रृद्धांजलि

रादुविवि पत्रकारिता विभाग द्वारा हिन्दी पत्रकारिता दिवस के मौके पर श्रृद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र, मुख्य अतिथि प्रो. संजय द्विवेदी, वरिष्ठ पत्रकार श्री चैतन्य भट्ट सहित सभी ने कोरोना काल में संस्कारधानी के पत्रकारिता जगत से बिछड़े पत्रकारों को वर्चुअल माध्यम से भावभीनी श्रृद्धांजलि अर्पित की गई। वरिष्ठ पत्रकार श्री काशिनाथ शर्मा ने बताया कि कोरोना संक्रमण काल में शहर से कई मूर्धन्य पत्रकारों को हमसे छीन लिया। उन्होने स्व. भगवतीधर बाजपेयी, स्व. अजीत वर्मा, स्व. सुशील तिवारी, स्व. जहीर अंसारी, स्व. हरीश चौबे, स्व. गोपाल अवस्थी, स्व. विनोद शिवहरे, स्व. लोकेश पाठक की पत्रकारिता का उल्लेख करते हुए कहा कि कोरोना महामारी के कारण दिवंगत हुए पत्रकारों के अच्छे कार्यों और समाजिक सरोकार की पत्रकारिता को आगे बढ़ाना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ई– व्याख्यानमाला का संचालन विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक एवं आभार प्रदर्शन पत्रकारिता विभाग अतिथि विद्वान डॉ. संजीव श्रीवास्तव ने किया। इस अयोजन में पत्रकारिता विभाग के अतिथि विद्वान डॉ. मोहम्मद जावेद, डॉ. शैलेष प्रसाद, डॉ. प्रमोद पाण्डेय, डॉ. मोहनिका गजभिये का सक्रिय योगदान एवं तकनीकी सहयोग अमरकांत चौधरी का रहा। इस अवसर पर बीएएमसी, बीजेसी, एमएएमसी, एमजेसी के छात्र–छात्राएं एवं अन्य प्रतिभागी मौजूद रहे।